भारतेन्दु युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

डॉ. रंजना कुमारी
हिन्दी विभाग
ति.मां.भा.वि.वि.भागलपुर

हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग का सूत्रपात भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु का आर्विभाव 1850 ई० में हुआ था और तब से लेकर 50 वर्षों तक हिन्दी साहित्य का संस्कार भारतेन्दु के संस्कार से ही मिलता जुलता रहा। ज्ञान-विज्ञान के नए क्षितिज पर खड़ा होकर इस प्राणवंत व्यक्ति ने हिन्दी भाषा और साहित्य को नयी दिशाओं की ओर प्रेरित किया और सबसे आगे बढ़कर साहित्य को जीवन के आमने सामने खड़ा कर दिया। डॉ० रामविलास शर्मा ने भारतेन्दु युग के साहित्य को जनवादी साहित्य कहा है। जनवादी साहित्य आम जनता की आशा, आकांक्षा और राग विराग का अभिलेख होता है। भारतेन्दु और उसके युग के अन्य साहित्यकारों ने साहित्य में पहली बार समसामयिक समस्याओं को अभिव्यक्ति दी। इसलिए वह साहित्य जनवादी साहित्य कहलाया उनके युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए हमें उस साहित्य को पद्य और गद्य दो भागों में बाँटकर उसका निरीक्षण-परीक्षण करना होगा।

१. काव्य प्रवृत्तियाँ : सर्वप्रथम हम भारतेन्दु और उसके युग की काव्य प्रवृत्तियों पर विचार करेंगे। कविता की दृष्टि से भारतेन्दु और उसके युगीन कवि पुरातन और नूतन का संगम उपस्थित कर रहे थे भारतेन्दु युग के कवि उस विन्दु पर खड़ा होकर काव्य रचना कर रहे थे जहाँ से एक रास्ता मध्यकालीन भक्ति और रसिकता की ओर जाता है और दूसरा रास्ता नये भाव-बोध की नयी दिशा में उद्घाटित करता है। इसलिए इस युग की कविता की पहली विशेषता यह है कि इसमें प्राचीन भावों का आख्यान प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन भावों के साथ-साथ रीतिकालीन रसिकता की भी प्रवृत्ति भारतेन्दु और उस युग के अन्य कवियों में दिखाई पड़ती है। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'भारतेन्दु : युगनायक' नामक पुस्तक में तो लिखा है कि श्रृंगार रस के किसी-किसी पद में तो सूरदास से टक्कर लेने की क्षमता है। निष्कर्ष यह है कि भारतेन्दु युग की कविता की एक प्रवृत्ति यह थी कि उसमें मध्यकालीन रूढ़ियों और परम्पराओं का पालन हुआ है यह पालन इतनी कुशलता के साथ हुआ है कि मध्यकाल के बड़े कवि भी भारतेन्दु युग की पंक्तियों को पढ़कर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। असल में हिन्दी कविता के पास अभी तक वह भाषा लिखकर नहीं आयी थी जिसमें भावों और विचारों की ठीक-ठीक अभिव्यक्ति हो सके।

२. देशभक्ति की प्रवृत्ति - भारतेन्दु युग की कविता की एक मुख्य धारा देश भक्ति की भावना है। भारतेन्दु ने शुरू-शुरू में राजभक्ति पर आधारित कुछ कविताएँ लिखी थी। लेकिन वक्त के बदलाव के साथ-साथ उनकी राजभक्ति राष्ट्रभक्ति में बदल गई और यह राष्ट्रभक्ति इतनी उग्र हो गई कि हमें आज भी आश्चर्य होता है कि

उस युग में इतना निर्भीक कवि कैसे हुआ इस महाप्राण कवि ने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शासन नीति का विरोध करते हुए व्यंग की भाषा में साफ लिखा है कि:

"भीतर-भीतर सब रस चूसै बाहर से तन मन धन भूसै।
जाहिर वातन में अति तेज क्या सखि साजन नहीं अंग्रेज।।"

जिस भाषा नीति को हम आज भी सुलझाने में असफल रहे हैं उसके सम्बन्ध में भारतेन्दु ने उसी समय घोषणा कर दी थी।

'निज भाषा उन्नति अहै। सब भाषा को भूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान मिटे न हिय को शूल।।'

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने स्वाधीनता का महत्व समझ कर इसकी मांग उस समय कर दी थी जिस समय अंग्रेजों के राज में कभी सूर्यास्त नहीं होता था। इतना निर्भीक कवि हिन्दी साहित्य में कोई दूसरा न हो सका। उन्होंने लिखा था

" सब तजि गहौ स्वतंत्रता नहिं चुपलाते खाव।
राजा करे सा न्यायि है वसा पर दो काम ।।"

उसके युग के अन्य कवियों ने भी अपनी इस प्रवृत्ति का परिचय खुलकर दिया था। इस बात का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि वे इष्टदेव के मंदिर में जाकर सब कुछ अपने राष्ट्र के लिए ही माँगते है- "कहाँ करुणानिधि केशव सोये" वाले गीत में कवि ने राष्ट्र के लिए ही सब कुछ माँगा है।

३. जनवादी विचारधारा - भारतेन्दु युग के साहित्य की एक तीसरी प्रवृत्ति यह है कि उसमें जनवादी विचारों और भावों को प्रश्रय मिला है समाज सुधार के प्रायः सभी अंगों पर इस युग में काफी कविता लिखी गई। मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित लोगों की कटु आलोचना अंग्रेजों की साज-पोशाक पहननेवाले भारतीय पर व्यंग बाण छोड़े हैं। इस तरह सभी तरह की रूढ़ियों , अन्ध विश्वासों, शोषण और दमन सभी समस्याओं पर इस युग की कविता मुखर हो उठी है। जनताकी समस्या को जनता की भाषा में उपस्थित करनेवाला साहित्य ही जनवादी साहित्य हो सकता है। इस कसौटी पर भारतेंदु का साहित्य शत प्रतिशत खड़ा उतरता है।

४. व्रजभाषा की प्रधानता - इस युग की कविता मुख्यतः ब्रजभाषा में लिखी गई। खड़ी बोली अबतक गद्य की ही भाषा मानी जाती थी भारतेन्दु ने खड़ी बोली में कविता लिखने का कुछ प्रयास तो किया लेकिन उसमें उसकी गति नहीं आई। इस युग के अन्य साहित्यकार भी इस क्षेत्र में असुल रहे। भारतेन्दु युग मे कविता की भाषा व्रजभाषा ही बनी रही। व्रजभाषा को एक स्वस्थ सम्पन्न एवं सुदीर्घ परम्परा प्राप्त थी इसलिए इस युग के कवि इस भाषा में सहजतापूर्वक अपने भाव और विचार को व्यक्त कर सके खड़ी बोली में इस युग के सभी कवियों के विचार बाधित होते रहे जिस कारण उन्होंने व्रजभाषा का ही मार्ग अपनाया। इस क्षेत्र में उन्हें अच्छी सफलता मिल गई।

५. अभिव्यक्ति की सहजता और कला पक्ष की रूक्षता - भारतेन्दु युग में सभी साहित्यकार अपने भावों और विचारों को जनता तक सम्प्रेषित करने के लिए आकुल-व्याकुल हो रहे थे। भावों का खजाना इतना लवालव था कि उन्हें व्यक्त करने के लिए वे साहित्यकार शिल्प योजना की परवाह नहीं करते। इसलिए भारतेन्दु युग

का काव्य साहित्य कला की दृष्टि से रूक्ष और कमजोर हैं। असल में उनका मानना था कि- "भाषा कैसों चाहिए, भाव अनुठों होय।" वास्तव में इस युग के साहित्यकार जीवन की सच्चाई में विश्वास करते थे। अतः उसे कला की नजाकत की परवाह नहीं थी। इस युग के साहित्य का मूल्यांकन कला की दृष्टि से नहीं बल्कि सामाजिक राजनीतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में होना चाहिए। भारतेन्दु युग का साहित्य पद्य से अधिक गद्य में प्राप्त होता है। इसलिए भारतेन्दु ओर उनके सहयोगी साहित्यकारों का वास्तविक महत्व उनके गद्य साहित्य में ही निहित है। इस युग के गद्य की पहली विशेषता यह है कि इसमें खड़ी बोली गद्य का प्रयोग हुआ है। खड़ी बोली गद्य में साहित्य की विविध विधाओं को जन्म देने का श्रेय भारतेन्दु एव उनके युगीन साहित्यकारों को ही है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निबंध लिखकर निबन्ध की एक नई विधा को भारतेन्दु इतना विकसित किया कि वह साहित्यकार और जनता के बीच का दूत बन गया। इस युग के निबन्ध भाषा की चपलता तथा विषय वस्तु के यथार्थ चित्रण के कारण सदा याद किए जायेगे। लेकिन निबन्ध से भी बढ़कर इस युग के नाटक काम आये। तत्कालीन समस्याओं को जनता के समक्ष उद्घाटित करने में भारतेन्दु युग के नाटक सबसे अधिक सार्थक सिद्ध हुए। स्वयं भारतेन्दु ने 17 नाटकों की रचना की। कुछ तो इतने क्रांतिकारी सिद्ध हुए कि सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश भारतेन्दु को नवयुग का विधाता मानने लगा।

"आवहु सब मिल रोबहु भारत भाई
हा। हा। भारत दुर्दशा देखी न जाई।"

जैसी पंक्तियाँ लिखकर भारतेन्दु ने भारतवासियों का आह्वान किया और देश माता की दुर्दशा दिखाकर उसे स्वाधीन बनाने के लिए जागरण मत्र दिया। ऐसी उत्कट राष्ट्रीयता और समाज सुधार की भावना अन्यत्र दुर्लभ है। भारतेन्दु ही नहीं प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमधन आदि नाटककार भी अपने नाटकों में सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं को ही व्याख्यायित करते थे। सबसे बड़ी बात यह कि इस साहित्यकार ने नाटक को खेलने के उद्देश्य से लिखा था न कि पढ़ने के उद्देश्य से। रंगमंच की दृष्टि से लिखे गये ये नाटक इतने सफल सिद्ध हुए कि जन-जीवन में एक क्रांति मच गई।

निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास, यात्रा विवरण, संस्मरण सभी विधाओं का भारतेन्दु युग में ही हुआ। भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य साहित्य को ऐसी डगर पर ला दिया जहाँ से आगे के सभी रास्ते प्रशस्त और दिव्य हो उठे। भारतेन्दु युग की देन हमारे साहित्य की अविस्मरणीय निधि है। आगे आनेवाले साहित्य रथ को इसी देन से शक्ति और सफलता मिलेगी। आधुनिक भावों और विचारों का सूत्रपात करने वाले बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र साहित्यिक इतिहास का अक्षय पुरुष बन गए हैं।